INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: X	**Department: Hindi**	**Date -09.08.26**
Study Material-7	**Topic:** लघु कथा	**Note: Pl. file in portfolio**

लेखन कौशल -लघु कथा

लघु कथा लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

- **लघु कथा छोटी कहानी होती है ।**
- **शीर्षक लिखना बहुत ज़रूरी है ।**
- **कथा दिए गए विषय से संबंधित होनी चाहिए ।**
- **कथा में रोचकता (appealingness) होनी चाहिए ।**
- **केवल दो या तीन पात्र हों ।**
- **लघु कथा लिखते समय हमें काल्पनिक पात्र , नाम और स्थान का प्रयोग करना चाहिए ।**
- **कथा के अंत में उससे मिलनेवाली शिक्षा /सीख का उल्लेख होना चाहिए ।**

1.जब रमेश अपनी दादी जी के पास था और लॉकडाउन का ऐलान होने के कारण वहाँ से अपने मम्मी-पापा के पास नहीं आ पाया और.....

मार्च का महीना था। कोविड-19 ने अपने पाँव पसारने आरंभ कर दिए थे। किसी तरह रमेश की बोर्ड की परीक्षाएँ संपन्न हो गईं। कोई भी विषय छूटा नहीं था। अब समय था मौज-मस्ती करने का। इसके लिए दादीजी के घर से बढ़िया जगह और कौन-सी हो सकती थी! मम्मी-पापा ने भी जैसे उसकी बदमाशियों से बचने के लिए राहत की साँस ली और उसका सामान पैक कराकर हवाई अड्डे पर छोड़ आए। कितनी उमंगें उठ रही थीं मन में! यात्रा का वक़्त कैसे बीता, पता ही नहीं चला। दादी जी उसे हवाई अड्डे पर लेने आई थीं। जब वे घर पहुँचे तो अचानक ख़बर आई कि कोरोना के केस बढ़ते जाने के कारण लॉकडाउन शुरू हो गया है। दिल-ही-दिल में दुआ माँगी कि यह

स्थिति यूँही बनी रहे। रमेश बस छुट्टियों का मज़ा लेना चाहता था। किसे पता था कि उसकी यह दुआ कबूल हो जाएगी। पहले कुछ दिन तो
गाँव में खूब खेले-कूदे। लॉकडाउन में भी कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था। सारा समय घर के बाहर ही बीतता। फिर धीरे-धीरे गाँव में भी सख्ती बरती जाने लगी थी। घर में बैठे-बैठे मन उचाट-सा होने लगा। दादी जी के घर में न इंटरनेट, न कोई वीडियो गेम। मम्मी-पापा की याद सताने लगी। शहर के सुख-आराम याद आने लगे। उसका मन किया कि उड़ कर अपने घर चला जाए । पर यह लॉकडाउन.....! बहुत बुरी तरह से रोना छूट रहा था। ऑनलाइन कक्षाएँ आरंभ होने वाली थीं। दोस्तों की याद आने लगी। कोई फ़्लाइट नहीं थी। अचानक ख़बर आई कि जो एन आर आई हैं, उनके लिए विशेष विमान सेवा आरंभ की गई हैं। वह ख़ुशी से झूम उठा। पापा से कहकर जल्दी से टिकट बुक करवाई और दो दिन बाद ही वह 'होम स्वीट होम' पहुँच गया।
ईश्वर इतना लंबा लॉकडाउन किसी को न दिखाए!

2. ईमानदारी

राजू स्कूल से आ रहा था तो रास्ते में उसे एक बटुआ पड़ा मिला । उस बटुए को खोला तो उसमें रु.2000 और एक दवा का पर्चा था । राजू को सोचते देर नहीं लगी । अगले चौराहे पर कई दवाओं की दुकानें थीं । राजू भागकर वहाँ गया और दुकानदारों से पूछा कि क्या कोई यहाँ पर दवा खरीदने आया था जिसके पैसे गिर गए हों और दवा नहीं खरीद पाया हो । कई दुकानदारों से पूछने पर एक दुकानदार ने कहा, "एक लड़का आया था, उसने दवा के पैसे देने के लिए जेब में हाथ डाला तो उसका बटुआ नहीं था ।" इतना सुनते ही राजू ने कहा कि वह लड़का कौन है ? दुकानदार ने कहा, "मुझे नहीं मालूम , लेकिन वह पैसा लेने गया है । दवा लेने के लिए वह ज़रूर वापस आएगा ।" राजू ने दुकानदार को सारी बात बता दी । कुछ देर बाद वह लड़का उस दुकान पर आया और एक नया पर्चा थमाते हुए कहा कि यह दवा मुझे चाहिए । दुकानदार ने बताया, "जो बटुआ तुम्हारा खो गया था, वह मिल गया है ।" उस लड़के ने कहा - कैसे ? तब राजू ने उसे बटुआ दे दिया ।

ने कहा, “एक लड़का आया था, उसने दवा के पैसे देने के लिए जेब में हाथ डाला तो उसका बटुआ नहीं था ।” इतना सुनते ही राजू ने कहा कि वह लड़का कौन है ? दुकानदार ने कहा, “मुझे नहीं मालूम , लेकिन वह पैसा लेने गया है । दवा लेने के लिए वह ज़रूर वापस आएगा ।” राजू ने दुकानदार को सारी बात बता दी । कुछ देर बाद वह लड़का उस दुकान पर आया और एक नया पर्चा थमाते हुए कहा कि यह दवा मुझे चाहिए । दुकानदार ने बताया, “जो बटुआ तुम्हारा खो गया था, वह मिल गया है ।” उस लड़के ने कहा - कैसे ? तब राजू ने उसे बटुआ दे दिया

उसने बटुआ खोलकर देखा । उसने उसमें रखे पैसे देखे और वह खुश हो गया । उसने राजू को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया । दुकानदार ने भी राजू की ईमानदारी की तारीफ़ की ।

उस लड़के ने बताया कि उसके पिताजी बीमार हैं । उसने रु.2000 इकट्ठा किया था। उसी पैसे से दवा लेने जा रहा था, लेकिन रास्ते में बटुआ गिर गया । इसके बाद वह दवा लेने के लिए अपने मित्र से पैसे उधार लेकर आया था । उस लड़के ने राजू को गले लगा लिया और कहने लगा -“ तुम बहुत ही नेक और ईमानदार हो । ईश्वर तुम्हारा भला करेगा ।”

राजू बहुत खुश हुआ और झूमता हुआ अपने घर की ओर चला गया ।

सीख - ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है ।

(P.T.O)

लघुकथा • सपना आर्य • स्वावलम्बी होना ही दरअसल स्वतंत्र होना है। आज उसने इसकी क़ीमत जान ली थी।

ख़ुद की मदद

'बेटा, आज डाकिया आया था तेरी डाक लेकर।' रेखा ने फोन पर अपने बेटे को जब ये बताया तो उसने पूछा, 'डाक किस बारे में थी?' 'वो तो शाम को जब तुम्हारे पापा आएंगे तब पढ़ कर बताएंगे' रेखा ने कहा। फोन रखने के बाद वह उदास हो गई, हर रोज़ यही होता हैं। सफ़ाई करो तो कोई काग़ज़ दिखे तो संभाल कर रखो, फिर किसी से पूछो कि काम का तो नहीं न। टेलीविजन देखो तो कुछ बातें सिर के ऊपर से निकल जाती हैं, यात्रा कर रही हों तो साथ वालों से पूछो कि कौन-सा स्टैंड आ गया। सबको अख़बार पढ़ते देखकर सोचती कि ये अलग ही दुनिया है, काश! मैं भी पढ़ी-लिखी होती। वो हर बार सोचती कि कल से मैं भी पढ़ूंगी पर घर के काम ख़त्म होने का नाम ही नहीं लेते थे।

आज बेटा घर आया हुआ था तो उसने सोचा कि चलो आज से पढ़ना शुरू करते हैं। बेटा तो मां की बात सुनकर बहुत ख़ुश हुआ और तुंरत बाज़ार से स्लेट और चॉक ले आया। मां जो बेटे की प्रथम गुरु होती है, आज ख़ुद बेटे से क-ख-ग सीखने लगी। शुरू कर तो दिया पर बढ़ती उम्र के कारण चीज़ें याद ही नहीं होती थीं। हौसला जवाब देने लगता तो कभी बेटी तो कभी पति प्रेरित कर देते। घर के काम से थोड़ी फ़ुर्सत निकालकर रेखा घर पर जो भी मिलता, उसी के पास बैठकर थोड़ा-थोड़ा सीखने की कोशिश करने लगी। कभी-कभी किसी शब्द को याद करना मुश्किल लगने लगता पर निरंतर अभ्यास जारी रहा। फिर एक दिन ऐसा सवेरा भी हुआ कि रेखा ने हिम्मत करके अख़बार उठाया। देखा तो अक्षर जाने-पहचाने लगे। जोड़कर पढ़ने और समझने में परेशानी हुई पर धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ने लगा। फिर एक दिन डाकिया आया तो रेखा ने बेटे को फोन लगाया, 'बेटा तेरी डाक आई हैं, ऊर्जा मंत्रालय की तरफ़ से पत्र आया है।' •

सीख - हमें स्वावलंबी होना चाहिए ।